ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

रायबरेली शहर के कक्षा 10वीं के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की समस्या समाधान योग्यता के सन्दर्भ में अध्ययन

Study In Terms of Problem Solving Ability of Adjustability of Adolescent Students of Class 10th of Rae Bareli City

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

अनिल कुमार
प्रवक्ता
एस0बी0वी0आई0 कालेज,
मुरारमउ, रायबरेली,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यालय के प्रकार, समस्या समाधान व उनकी अन्तर्किया के प्रभावों का किशोरो के समायोजन का अध्ययन करना तथा लिंग समस्या व उनकी अन्तर्क्रिया के प्रभावों का किशोरो के समायोजन पर अध्ययन करना। इन्ही दोनो उक्त उद्देश्यों पर शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है तथा प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं समायोजन से सम्बन्धित परीक्षण किया गया । इसमें दुबे एल0एन0 द्वारा निर्मित समस्या समाधान योग्यता परीक्षण का उपयोग किया गया तथा सिन्हा ए0 के0 एवं सिंह आर0पी0 द्वारा निर्मित समायोजन इन्वेटरी का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से निष्कर्ष प्राप्त हुए कि विद्यालय के प्रकार का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। लिंग का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। लिंग समस्या समाधान व उनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है एवं समस्या समाधान का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।

The purpose of this study is to study the adjustment of adolescents to the type of school, problem solving and the effects of their interactions, and to study the adjustment of adolescents to the effects of gender problem and their interactions. A null hypothesis has been constructed on both these objectives and in the research presented, tests related to problem solving ability and adjustment of students were conducted. In this, problem solving ability test made by Dubey LN was used and adjustment inventories made by Sinha AK and Singh RP were used. The findings presented from the presented research work that school type has no meaningful effect on adolescent adjustment. Gender has no meaningful effect on adolescent adjustment. The effect of gender problem resolution and their interaction has no meaningful effect on adolescent's adjustment and problem resolution has no meaningful effect on adolescent's adjustment.

मुख्य शब्द : किशोरावस्था, समायोजन, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक दायित्व, पूर्ण, ज्ञानात्मक, परिकल्पना, सार्थक, न्यायाधीश शोधकर्ता, अंतर्क्रिया समतुल्यता, विश्लेषण संवेगात्मक मूल्यांकन।

Adolescence, Adjustment, Psychological, Social Responsibility, Absolute, Knowledgeable, Hypothesized, Meaningful, Judge Researcher, Interactional Equivalence, Analysis, Emotional Evaluation.

प्रस्तावना

किशोरावस्था में बालक की आयु 12 से 17 वर्ष के मध्य होती है। यह अवस्था बालक के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण और जटिल अवस्था है। इस अवस्था में बालक के सभी मनोवैज्ञानिक पहलू उसके दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। इसी कारण इस अवस्था में किशोरों में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है, जैसे समायोजन की समस्या, उचित पाठ्यक्रम की समस्या आदि।

मानव जीवन के विकास की प्रक्रिया मे किशोरावस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। इसे बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य का सन्धिकाल कहते हैं। इस अवस्था की विडम्बना होती है– बालक स्वयं को बड़ा समझता है और उसे छोटा समझते हैं। अनेंक विद्वानों ने किशोर अवस्था के महत्व एवं प्रभाव का विशद् अध्ययन किया है। उन विद्वानों में क्रो एवं क्रो, हेडो कमेटी, तथा स्टेनले हाल के नाम प्रमुख है। किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल भी है। इस अवस्था मे समायोजन न कर सकनें के कारण मृत्यु दर और मानसिक रोगों की संख्याा व अन्य अवस्थाओं की तुलना में बहुत अधिक होती है। अतः इस अवस्था में समस्या समाधान सर्वाधिक आवश्यक है।

समायोजन

समायोजन का सामान्य अर्थ यह है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी आवश्यकता व उससे सम्बन्धित परिस्थिति के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेता है तो वह समायोजित है।

समायोजन हमारे जीवन की एक आवश्यक प्रक्रिया है। समायोजन शब्द जीव विज्ञान के 'अनुकूलन' का पर्याय है। दैनिक जीवन में मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति समायोजन की प्रक्रिया के द्वारा करता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है। यह समायोजन व्यक्ति अपनी क्षमता व योग्यता के अनुसार करता है।

किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर नही करती है कि वह कितनी समस्याओं और परेशानियों का सामना करता है। बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि न समस्याओं और परेशानियों के प्रति किस प्रकार से प्रतिक्रिया करता है या इनमें वह किस प्रकार से समायोजन करता है। इस प्रकार समायोजन मं दो पहलुओं पर विचार किया जता है –

1. व्यक्ति किस प्रकार की समस्याओं के प्रति समायोजन करता है?
2. व्यक्ति समस्याओं के प्रति किन तरीकों से समायोजन करता है?

समायोजन का अर्थ एवं लक्षण

बोंरिंग, लैंगफेल्ड व वेल्ड के अनुसार, ''समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओ की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।''

समायोजन करने वाले व्यक्ति में ये लक्षण पाये जाते हैं–

1. परिस्थति का ज्ञान, नियन्त्रण तथा अनुकूल आचरण,
2. सन्तुलन,
3. पर्यावरण तथा परिस्थति से लाभ उठाना,
4. समाज के अन्य व्यक्तियों का ध्यान,
5. सन्तुष्टिव सुख,
6. सामाजिकता, आदर्श चरित्र, संवेगात्मक रूप से स्थिर, सन्तुलित तथा दायित्वपूर्ण तथा
7. साहसी व समस्या का समाधानयुक्त।

इसीलिए गेट्स ने कहा है– समायोजित व्यक्ति वह है जिसकी आवश्यकताएं एवं तृप्ति सामाजिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का स्वीकृति के साथ संगठित हो।

समस्या समाधान का अर्थ तथा विशेषताएं

आइजनेक (1972) और उनके साथियों के अनुसार, समस्या समाधान वह प्रक्रिया है जिसमें प्राथमिक ज्ञानात्मक परिस्थतियों से प्रारम्भ कर इच्छित लक्ष्य तक पहुँचना अपेक्षित है।

जब व्यक्ति के सामने कोई विशिष्ट परिस्थिति आती है जिसमें वह अपने आपको कठिनाई में पाता है और वह यह नही समझ पाता कि उसे क्या करना चाहिए। यह विशिष्ट परिस्थति ही समस्या है। ऐसी समस्याएं मानसिक क्षमताओं को व्यावहारिक रूप, आंतरिक प्रदर्शन स्मृति तथा तर्क में परिवर्तित करती है। समस्या समाधान गेने के द्वारा दिए गए पदानुक्रम में सबसे उच्च श्रेणी का अधिगम है जो कि पूर्व पदो के स्वामित्व पर निर्भर करता है। पूर्व अनुभवों को आधार बनाकर हम किसी समस्या को हल करने के लिए कुछ सिद्धान्तों तथा तथ्यों की व्याख्या करते हैं। भौतिक वातावरण में किसी समस्या के समाधान में हमें कुछ पूर्वानुमान तर्कों और सिद्धान्तों का विश्लेषण कारण प्रभाव बनाने के लिए करना पड़ता है। सामान्यतः हमारे दैनिक जीवन की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए होते है। परन्तु ऐसा हमेशा नहीं होता। कभी–कभी हमारे सामने ऐसी समस्यात्मक परिस्थति खड़ी हो जाती है, जब हमें रोजमर्रा से हटकर सोचना पड़ता है ताकि उस समस्या का समाधान कर सके तथा हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सके।

समस्या कथन

''रायबरेली शहर के कक्षा 10वीं के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता की समस्या समाधान योग्यता के सन्दर्भ में अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यालय के प्रकार समस्या समाधान व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभावों का किशोरो के समायोजन पर अध्ययन करना।
2. लिंग समस्या व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभावों का किशोरो के समायोजन पर अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. विद्यालय के प्रकार समस्या समाधान व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभावों का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही हैं।
2. लिंग समस्या व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभावों का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या रायबरेली शहर के विभिन्न विद्यालयों के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को लिया गया। इस जनसंख्या में से न्यादर्श के चयन हेतु यादृच्छिक न्यादर्श तकनीकी का चयन किया गया। इस हेतु रायबरेली शहर के विभिन्न 66 विद्यालयों मे से 8 विद्यालयों के 411 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन

विद्यालयों के 411 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन विद्यालयों के 411 किशोर विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। ये सभी विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश प्रयागराज के विद्यार्थी थे। वे हिन्दी बोल, समझ व लिख सकते थे। ये विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के थे।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं समायोजन से सम्बन्धित जानकारी एकत्र की गयी। इन चरों के मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा निम्न परीक्षण या मापनी का प्रयोग किया गया।

समस्या समाधान योग्यता परीक्षण

दुबे, एल0एन0 द्वारा निर्मित समस्या समाधान योग्यता परीक्षण का उपयोग किया गया। यह परीक्षण हायर सेकेण्डरी एवं उच्च शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों पर मानकीकृत किया गया था। हिन्दी भाषा में उपलब्ध इस परीक्षण में कुल 20 वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न थे जिनमें प्रत्येक के लिए 4 विकल्प दिए गए थे। इसकी अर्द्ध विच्छेदित विश्वसनीयता गुणांक 0.789 तथा आनुपातिक (रेशनल) समतुल्यता गुणांक 0.768 था। साथ ही परीक्षण की विषयवस्तु वैधता भी स्थापित की गई। यह परीक्षण 12 से 17 वर्ष के किशोरो के लिए था।

समायोजन इन्वेन्टरी

सिन्हा, ए0के0पी0 एवं सिंह आर0 पी0 द्वारा निर्मित समायोजन इन्वेन्टरी का उपयोग किया गया। इस इन्वेन्टरी को कक्षा 9वीं से11वीं स्तर के विद्यार्थी पर मानकीकृत किया गया था। हिन्दी भाषा में उपलब्ध इस इन्वेन्टरी मे कुल 60 कथन थे। इसका परीक्षण पुनः परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक 0.93 एवं अर्द्ध विच्छेदित विश्वसनीयता गुणांक 0.95 था। साथ ही परीक्षण वस्तु वैधता भी स्थापित की गई थी। यह परीक्षण 11 से अधिक उम्र के बच्चों के लिए था।

प्रदत्त संकलन की विधि

प्रदत्त संकलन निम्न सोपानों के अंतर्गत किया गया–

1. सर्वप्रथम न्यादर्श हेतु चयनित विद्यालयों के प्राचार्यों से शोधकार्य हेंतु अनुमति ली गयी। शोध के स्वतंत्र चरों के मापन हेतु आवश्यक परीक्षण एवं मापनी की न्यादर्श के अनुसार छायाप्रति एकत्रित की गई।
2. न्यादर्श के लिए चुने हुए विद्यार्थियों को मौखिक रूप से दिशा निर्देश प्रदान कर शोध का उद्देश्य स्पष्ट किया गया।
3. सम्पूर्ण न्यादर्श को क्रमवार समायोजन इन्वेन्टरी एवं समस्या समाधान योग्यता परीक्षण प्रदान की गयी एवं उससे सम्बन्धित आवश्यक निर्देश दिए गए एवं विद्यार्थियों की अनुक्रिया प्राप्त कर एकत्रित किया गया।

परिणाम, विवेचना एवं विश्लेषण

विद्यालय के प्रकार, समस्या समाधान व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का किशोरो के समायोजन पर अध्ययन करना

प्रस्तुत शोध कार्य का प्रथम उद्देश्य था–विद्यालय के प्रकार, समस्या समाधान व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का किशारो के समायोजन पर अध्ययन करना। इससे सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण ''द्विमार्गीय एनोवा'' से किया गया है। प्राप्त परिणाम नीचे सारणी में दिए गये है–

सारणी : किशोर विद्यार्थियों के समायोजन के सन्दर्भ में 'द्विमार्गीय एनोवा'' का सारांश

विचरण के स्रोत	SS y.x.	dfy	MSS y.x.	Fy.x.
विद्यालय के प्रकार	65.8	1	65.8	1.322
समस्या समाधान	44.875	1	44.875	0.902
विद्यालय का प्रकार समस्या समाधान	44.603	1	44.603	0.896

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि विद्यालय के प्रकार के लिए f–मान 1.322 है जो कि क्रि 1ध्407 के साथ 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नही है, अर्थात शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन माध्य प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नही है, इस स्थित में शून्य परिकल्पना कि ''विद्यालय के प्रकार का किशोरों के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।'' को निरस्त नहीं किया जाता है।

प्रस्तुत शोध मे दो प्रकार के विद्यालय लिए गये थे, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि किशोर विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय के प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता है। इन दोनो ही विद्यालयों के विद्यार्थी समान रूप में समायोजित पाए गये। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि वर्तमान में शासन द्वारा शासकीय विद्यालयों को सर्वसुविधा युक्त बनाया जा रहा है व शासन के नियमों के तहत अशासकीय विद्यालयों में सर्वसुविधाएँ उपलब्ध कराना अनिवार्य है। साथ ही हो सकता है कि जहाँ शासकीय विद्यालयों में उच्च स्तरीय व प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है जो कि उन्हें विद्यालय पाठ्यचर्या में समायोजित होने में मदद करता है वहीं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत उत्तम होती है, अतः उनके अभिभावकों द्वारा उन्हे समायोजित करनें में सहायता प्रदान की जाती होगी। अतः प्रस्तुत निष्कर्ष प्राप्त हुए।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि समस्या समाधान के लिए f–मान 0.902 है जो कि df = 1/407 के साथ 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, अर्थात उच्च समस्या समाधान एवं निम्न समस्या समाधान के किशोर विद्यार्थियों के माध्य प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नही है, अतः शून्य परिकल्पना कि ''समस्या समाधान का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।'' को निरस्त नहीं किया जाता है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि किशोर विद्यार्थियों के समायोजन पर समस्या समाधान का प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रस्तुत शोध में समस्या समाधान के दो स्तर बनाए गए, उच्च समस्या समाधान वाले विद्यार्थी एवं निम्न समस्या समाधान वाले विद्यार्थी। इन दोनों ही प्रकार के

विद्यार्थियों का समायोजन समान पाया गया। प्रस्तुत शोध में दुबे एल0एन0 द्वारा निर्मित समस्या समाधान योग्यता परीक्षण का उपयोग किया गया जो गणितीय योग्यता पर आधारित है, अतः समान समायोजन का कारण यह हो सकता है कि गणितीय योग्यता अधिक होने पर परिस्थतियाँ उसके अनुसार हो जाये, यह आवश्यक नही है। साथ ही गणितीय योग्यता विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक समायोजन को प्रभावित नही करती है, हो सकता है। अतः प्रस्तुत निष्कर्ष प्राप्त हुए।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि विद्यालय के प्रकार एवं समस्या समाधान योग्यता की अंतर्क्रिया के लिए f –मान 0.896 है जो कि d f = 1/407 के साथ 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नही है अर्थात विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय के प्रकार एवं समस्या समाधान योग्यता की अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नही है। अतः, शून्य परिकल्पना कि ''विद्यालय के प्रकार, समस्या समाधान योग्यता व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभावों का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।'' को निरस्त नही किया जाता है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि किशोर विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय के प्रकार, समस्या और समाधान योग्यता व उनकी अंतर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणाम का मुख्य कारण यह हो सकता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में समस्या समाधान योग्यता के सोपान निश्चित होते हैं। शासकीय व अशासकीय शालाओं में उच्च व निम्न समस्या समाधान योग्यता वाले विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार, समान शैक्षिक सुविधाएँ, समान सामाजिक वातावरण व समान पाठ्य चर्या आदि उपलब्ध कराई जाती है अतः दोनो ही समूह के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

लिंग, समस्या समाधान व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का किशोरो के समायोजन पर अध्ययन करना

प्रस्तुत शोध कार्य का द्वितीय उद्देश्य था – लिंग समस्या समाधान व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का किशोरो के समायोजन पर अध्ययन करना। इससे सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण : द्विमार्गीय एनोवा से किया गया है। प्राप्त परिणाम नीचे सारणी में दिए गये है–

सारणी : किशोर विद्यार्थियों के समायोजन के सन्दर्भ में : द्विमार्गीय एनोवा का सारांश

विचरण के स्रोत	SSy.x	dfy	MSSy.x	Fy.x
लिंग	41.75	1	41.75	0.836
समस्या समाधान	25.99	1	25.99	0.521
लिंग समस्या समाधान	15.75	1	15.75	0.316

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि लिंग के लिए f–मान 0.836 है जो कि df = 1/407 के साथ 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नही है, अर्थात छात्रों छात्राओं का उनके समायोजन माध्य प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नही है, अतः शून्य परिकल्पना कि ''लिंग किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।'' को निरस्त नही किया जाता है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि किशोर विद्यार्थियों के समायोजन पर लिंग का सार्थक प्रभावन नही पड़ता है। पाल एच0 आर0 (1976), पाठक, आर0 (1970) के द्वारा प्राप्त शोध परिणाम की छात्राएँ, छात्रों की तुलना मे अधिक समायोजित होती है, कि विपरीत इस शोध मे समायोजन पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है, यह पाया गया। इसका कारण हो सकता है कि वर्तमान में परिवारों एवं समाज में लड़के और लड़कियों में कोई भेदभाव नही किया जाता है। दोनो को ही संवेगात्मक, शैक्षिक एवं सामाजिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती है। दोनो का ही स्तर समान माना जाता है। किशोर एवं किशोरियों में भी जन संचार माध्यमों के कारण जागरूकता का विकास हो रहा है। वे अधिक व्यापक दृष्टिकोण, सामाजिक समझ और विश्लेषण क्षमता के साथ परिस्थितयों का समान तरीके मे सामना करते है। अतः हो सकता है कि इन कारणों लिंग का समायोजन पर प्रभाव नहीं पाया गया।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि समस्या समाधान के लिए f–मान 0.521 है जो कि df = 1/407 के साथ 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नही है, अर्थात उच्च समस्या समाधान एवं निम्न समस्या समाधान के किशोर विद्यार्थियों के माध्य प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नही है, अतः शून्य परिकल्पना कि ''समस्या समाधान का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।'' को निरस्त नहीं किया जाता है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता हद्यै कि किशोर विद्यार्थियों के समायोजन पर समस्या समाधान का प्रभाव नही पड़ता है।

प्रस्तुत शोध में समस्या समाधान के दो स्तर बनाए गए, उच्च समस्या समाधान वाले विद्यार्थी एवं निम्न समस्या समाधान वाले विद्यार्थी। इन दोनो ही प्रकार के विद्यार्थियों का समायोजन समान पाया गया। प्रस्तुत शोध में दुबे एल0एन0 द्वारा निर्मित समस्या समाधान योग्यता परीक्षण का उपयोग किया गया जो गणितीय योग्यता पर आधारित है। अतः समान समायोजन का कारण यह हो सकता है कि गणितीय योग्यता अधिक होने पर परिस्थितियाँ उनके अनुसार हो जाए यह आवश्यक नहीं है। साथ ही गणितीय योग्यता विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन को प्रभावित नही करता है, हो सकता है, अतः प्रस्तुत निष्कर्ष प्राप्त हुए।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि लिंग एवं समस्या समाधान योग्यता की अंतर्क्रिया के लिए f–मान 0.316 है जो कि df = 1/407 के साथ 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नही है। अर्थात विद्यार्थियों के समायोजन पर लिंग एवं समस्या समाधान योग्यता की अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''लिंग समस्या समाधान योग्यता व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभावों का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।'' को निरस्त नहीं किया जाता है। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि किशोर विद्यार्थियों के समायोजन पर लिंग, समस्या समाधान योग्यता व उनकी अंतर्क्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रस्तुत शोध से प्राप्त इस निष्कर्ष के लिए हो सकता है कि उच्च व निम्न समस्या समाधान योग्यता

वाले विद्यार्थियों के साथ विद्यालयों, परिवारो एवं समाज में समान व्यवहार, समान शैक्षिक सुविधाएँ, समान सामाजिक वातावरण व समान पाठ् यचर्या आदि उपलब्ध कराई जाती है। अतः दोनो ही समूह के विद्यार्थियों के समायोजन मे सार्थक अन्तर नही पाया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :

1. विद्यालय के प्रकार का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।
2. लिंग का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
3. लिंग, समस्या समाधान व उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।
4. समस्या समाधान का किशोरो के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध कार्य के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित है–

प्राचार्य

प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के लिंग एवं समस्या समाधान का उनके समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। अतः प्रवेश के समय लिंग को प्राथमिकता न दें। साथ ही समस्या समाधान पर आधारित प्रवेश परीक्षा न लेकर अन्य आधारो पर प्रवेश दे सकते ळें

अध्यापक

प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के लिंग एवं समस्या समाधान का उनके समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही है अतः अध्यापक को कक्षा शिक्षण, मूल्यांकन एवं गतिविधियों के समय विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता को एवं उनकी लिंग को ध्यान नहीं दे। सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।

विद्यार्थी

प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को विद्यालय में प्रवेश के समय शासकीयता एवं अशासकीयता को चयन का आधार नहीं रखना चाहिए क्योंकि विद्यालय प्रकार से समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

अभिभावक

प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणाम कक्षा 10वीं के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन के सन्दर्भ में प्राप्त किए गए है जहाँ समस्या समाधान योग्यता, विद्यालय के प्रकार एवं लिंग का समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है। अतः विद्यालय के प्रकारो को विशेष महत्व न दें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बेस्ट जॉन डब्ल्यू एवं खान जेम्स बी (2003) कपिल एच0के0(2009), अनुसंधान विधियां आगराः एच0पी0 भार्गव बुक हाउस.*
2. *सारस्वत आर0ए0 (1982) : दिल्ली के उच्च विद्यालयों के छात्रों के स्वधारणा का समायोजन, मूल्य अकादमिक उपलब्धि, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर लिंग भेद के सम्बन्ध में अध्ययन.*
3. *लाल एवं जोशी :– शिक्षा मनोविज्ञान , प्रारम्भिक साँख्यिकी, आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ.*
4. *पाल0एच0आर0: प्रगति शिक्षा मनोविज्ञान हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, 2006.*
5. *कौल लोकेश 2007, मैथोलॉजी ऑफ एजुकेशन रिसर्च नोएडा विकास पब्लिकेशन हाउस प्राइवेट लिमिटेड।*
6. *कुलश्रेष्ठ एस. पी. 1979 किशोर किशोरियों के मध्य उन्मुख अभिरुचि व अभिव्यक्ति की अवधारणा के साथ और सह संबंधात्मक अध्ययन*